भगीरथ

ई-मेल:gyansindhu@gmail.com

उठ खड़े होने की हिम्मत

"नशा करके आए तो घर में घुसने नहीं दूंगी, समझे।" कांता ने फोन पर पति को सावचेत किया। उसका स्वर ऊँचा और सख्त था।

"अरे पति से ऐसे बात करती है!" उसकी सहेली शांता ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"तो कैसे बात करूँ उस बेवड़े से तुम्हीं बताओ?"

"करती तो तुम ठीक हो लेकिन इतनी हिम्मत आती कहाँ से हैं?" वह कुछ होंठों ही होंठों में बुदबुदाने लगी। "पहले तो तुम्हारे मुँह में जबान नहीं थी, हमेशा दबी-सी रहती थी अब क्या हो गया?"

"होना क्या है! मैं कमाती हूँ, घर का खर्च निकालती हूँ, मैं उसकी कोई मोहताज नहीं। एक दिन गुस्से में मुझ पर हाथ चलाया, कहने लगा—घर से निकल जा। तो मैंने हाथ मरोड़कर कहा—सौ नंबर पर फोन कर दूंगी। मैं घर से क्यों निकल जाऊँ? सात फेरे लेकर लाए हो तुम मुझे, मेरा भी घर पर बराबर का हक़ बनता है, जाना है तो तुम जाओ। तब से थोड़ी अकल ठिकाने आई है। जितना दबो, उतना दबाया जाता है। यह दुनिया की रीत है।"

"और सुन, पहले पति जरा-जरा सी बात पर थप्पड़ मार देते थे और मैं सहन करती थी। हाथ-मुँह पर अक्सर नील के निशान दिखते थे, कोई पूछता तो हँसकर टाल देती या चोट लगने का बहाना करती। एक बार मैम साहब ने सलाह दी—सौ नंबर पर फोन करने की। बस यही धमकी काम आई।"

"पहले मैं सोचती थी—समय के साथ सब ठीक हो जायगा; लेकिन अपने आप कुछ ठीक नहीं होता बहना; कुछ तो जुगत करनी पड़ती है। और थोड़ी हिम्मत भी दिखानी पड़ती है।"

पीठ पर पहाड़

—क्या करूँ, नौकरी जा चुकी है, 20 लाख का लोन बाकी है, और घर के खर्चे भी नहीं चल पाते हैं?

—सुनकर अचरज होता है कि लाखों कमाने वाले भी कर्ज में डूबे हैं। आपका सालाना पैकेज 15 लाख का था फिर ये सब कैसे हो गया ?

—ड्रीम हाउस खरीदने के लिए लाखों का कर्ज लिया फिर उसके इन्टीरीयर डेकोरैशन में चार-पाँच लाख और खर्च कर दिए।

—अगर आप किराये से 2 बीएचके में रहते तो दस हजार किराये से रह सकते थे। कहते हैं, मूर्ख लोग मकान बनाते हैं या खरीदते हैं और बुद्धिमान आराम से उसमें रहते हैं। भाई, कार भी तो खरीदी होगी, बड़ी और महँगी?

—हाँ, बिल्कुल बड़ी और महँगी कार यह सोचकर कि फाइनैन्स तो हो ही रही है; ईएमआई का क्या है देते रहेंगे। इससे सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होती है। बीबी बच्चे की प्रसन्नता का कोई पार नहीं। आखिर कमाते तो इनके लिए ही है।

—इस तरह आपने अपना दायित्व बढ़ा लिया। कार की जरूरत आपको वीकेंड पर पड़ती है ओला और ऊबेर के जमाने में यह सब करने की क्या जरूरत है?

—ये सब कॉर्पोरेट लाइफ स्टाइल यानी उच्च जीवन स्तर मैन्टैन करने के लिए किया।

—आपको बिल्डर या उसके एजेंट ने बताया होगा कि आप इनवेस्टमेंट कर संपत्ति खरीद रहे हैं जबकि आप वास्तव में दायित्व खरीद रहे थे जो एसेट जैसा दिखता है इससे आपको मनोवैज्ञानिक संतुष्टि मिलती है लेकिन आर्थिक दृष्टि से अनवाइज़ निर्णय है। टेक्स बेनीफिट का लालच देकर जाल में फँसाया जाता है।

—अब इस दायित्व से कैसे छुटकारा पाया जाय?

—दायित्व से छुटकारा तो तभी पाया जा सकता है जब आप उसकी पूरी भरपाई कर दें। नौकरी होती तो भी इसका भुगतान करने में तीस वर्ष लगते तब तक आप 55 वर्ष से अधिक के हो चुकते यानी आप जीवनभर कर्ज में डूबे रहते। ऐसा सोचा था कर्ज लेते वक्त?

—नहीं पर अब तो सोचना ही पड़ेगा।

—अब तो कर्ज आपके जीवन का संकट बन गया है। हाँ, पैतृक सम्पति हो तो उसे रेहन या बेचकर कर्ज से छुटकारा पा सकते हो।